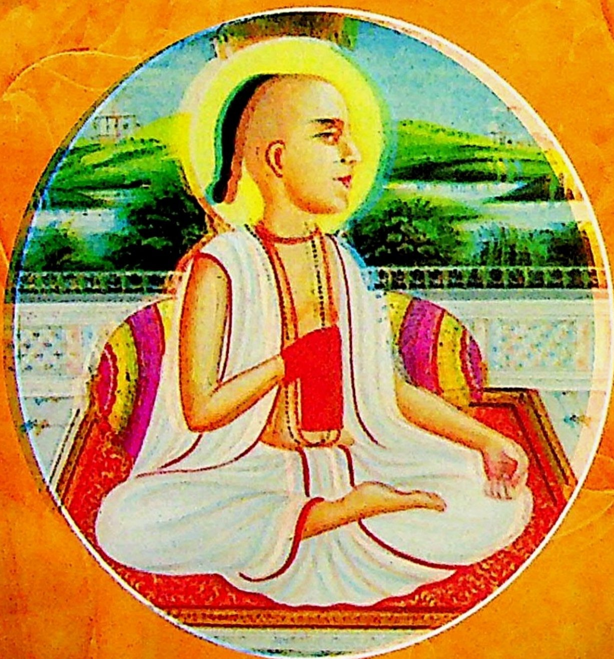
॥ श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते ॥



॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

श्रीपीताम्बरदशश्लोकी



ग्रन्थ प्रणेता

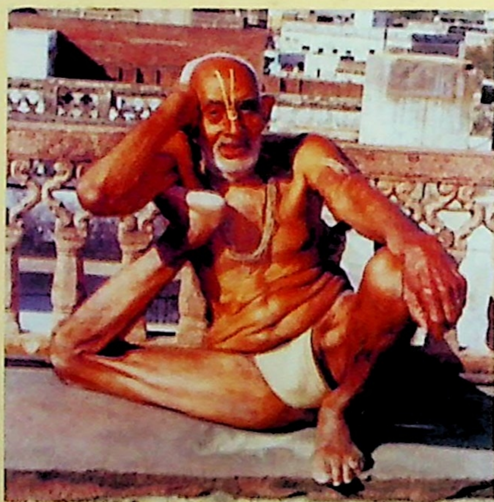
अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्री "श्रीजी" महाराज

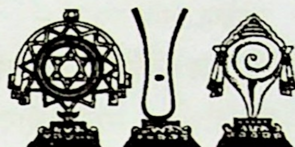


अ. पं. श्रीव्रजवल्लभशरणजी से अन्तिम मिलन के अवसर पर उनसे प्रसाद प्राप्त करने की इच्छा करते हुए पूज्य आचार्य श्री



योग मुद्रा की अवस्था में अ. पं. श्रीव्रजवल्लभशरणजी

* श्रीसर्वेश्वरो जयति *



॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

श्रीपीताम्बरदशश्लोकी

ग्रन्थ प्रणेताः--

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु

श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्री ''श्रीजी'' महाराज

प्रकाशक--

विद्वत्परिषद्

अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ

सलेमाबाद, पुष्करक्षेत्र, किशनगढ जि. अजमेर (राज०)

चैत्र शुक्ल १, शुक्रवार

नवसम्वत्सर, दिनाङ्क २३/३/२०१२ ई०

वि० सं० २०६९ श्रीनिम्बार्काब्द ५१०८

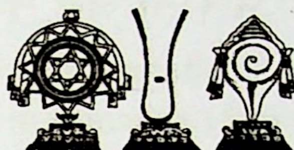
पुस्तक प्राप्ति स्थान--
अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ
निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)
फोन नं० - ०१४६७ -२२७८३१

प्रथमावृत्ति--२०००

मुद्रक--
श्रीनिम्बार्क मुद्रणालय
निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

न्यौछावर
पाँच रुपये

* श्रीसर्वेश्वरो जयति *



॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

समर्पणम्

गोपालाय चलाग्रामे शोभिताय परात्मने।
पीताम्बरदशश्लोकी समर्प्यते च मञ्जुला॥

मिति – चैत्र शुक्ल १ शुक्रवार
नवसम्वत्सर, वि० सं० २०६९
दिनाङ्क – २३ / ३ / २०१२ ई०

समर्पकः
श्रीगोपालपदाम्बुजभक्तिकामः–
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यः

श्रीपीताम्बरदेवजी का पावन चरित

इस भूमण्डल पर भारतवर्ष की अनुपम महिमा पुराणादि शास्त्रों में निर्दिष्ट की गई है। इस भारतवर्ष के सुपावन धरातल पर राजस्थान में पुष्करतीर्थ एंव लोहार्गलतीर्थ की दिव्य-महिमा का पर्याप्त वर्णन है। लोहार्गलतीर्थ के निकटवर्ती एक ग्राम में गौड़विप्र परिवार में श्रीपीताम्बरदेवजी का प्राकट्य हुआ। आपने प्रौढावस्था में अपना हिन्दी एवं संस्कृत का गहन अध्ययन के अनन्तर परिभ्रमण करते हुए अखिल भारतीय जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ-सलेमाबाद में आपका शुभागमन हुआ। यहाँ अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज के दिव्य दर्शन प्राप्त कर आपने उनसे विरक्त वैष्णवी दीक्षा प्राप्त कर कतिपय समय पर्यन्त आपश्री की सन्निधि में निवास कर वैष्णवता की शिक्षा प्राप्त की। कुछ समय पश्चात् श्रीगुरुवर्य की आज्ञानुसार किशनगढ के निकटवर्ती सिलोरा ग्राम के समीप पर्वतमालाओं के मध्य कन्दरा (गाल) में तपःसाधना की। आपके वहाँ निवास के कारण वह कन्दरा (पीताम्बरजी की गाल) नाम से परम प्रख्यात होगई। वर्तमान में भी इसी नाम से उस कन्दरा को सभी जन समुदाय उसे पीताम्बरजी की गाल नाम से कहते हैं। आपका कार्यकाल विक्रम की १५ वीं एवं १६ वीं शताब्दी का मध्यकाल होना चाहिए।

कालान्तर में आप पुनः आचार्यपीठ आकर निज श्रीगुरुदेव श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज के आदेशानुसार तीर्थयात्रा के लिए

प्रस्थान किया और यात्रा करते हुए सीकर मण्डलान्तर्गत चला ग्राम में आये। यहाँ के भगवद्भक्तों की विनम्र प्रार्थना पर आप अपने आराध्य श्रीगोपाल भगवान् सहित वहीं एक पर्णकुटी बना कर निवास करने लगे। उस समय एक प्रेत ने आपके समीप आकर अपने प्रेतत्व से छुटकारा पाने के लिए प्रार्थना की। उस प्रेत की करुणाभरी प्रार्थना पर उसे वैष्णवी दीक्षा देकर उसका कल्याण किया। इस प्रकार आपकी चमत्मारपूर्ण अनेक घटनायें हैं, जिनका विस्तारभय से यहाँ उल्लेख नहीं किया है। कुछ समय पश्चात् आपश्री ने अपने उपास्य श्रीगोपाल भगवान् के विराजने हेतु एक विशाल मन्दिर का निर्माण कराके शास्त्र विधि-विधान से श्रीगोपाल भगवान् को प्रतिष्ठित किया। प्रतिष्ठा के पुनीत अवसर पर चला क्षेत्रीय एवं दूरवर्ती नगरों से अनेक सन्त-महन्त-महात्मा सम्मिलित हुए और भगवत्प्रसाद ग्रहण किया। श्रीपीताम्बरदेवजी महाराज ने उस प्रतिष्ठा आयोजन में सभी का यथायोग्य सम्मान किया। उस समय समागत सन्त-महन्त महानुभावों ने आपको महन्त पदवी से विभूषित किया। उसी आयोजन के अवसर पर श्रीगोपाल भगवान् के मन्दिर परिसर में एक सुन्दर उद्यान (बगीचा) लगाया तथा श्रीगोपालजी के भोग-राग हेतु बहुतसी-भूमि भी समर्पित हुई जिसमें ऋतु अनुसार अन्न का उत्पादन होता रहे। आगे चलकर आपश्री की परम्परा में जो-जो महन्त महानुभाव हुए उनकी महन्त परम्परा इस प्रकार है--१. श्रीपीताम्बरदेवजी २.श्रीदयालुदासजी ३. श्रीखेमदासजी ४. श्रीमनसारामजी ५. श्रीभक्तरामजी ६.श्रीमाधवदासजी ७. श्रीगोपालदासजी ८. श्रीब्रह्मदासजी ९. श्रीमङ्गलदासजी १०. श्री

नारायणदासजी और ११. बाबा श्रीबजरङ्गदासजी (म० पं० अ० श्रीव्रजवल्लभशरणजी, वेदान्ताचार्य-पंचतीर्थ, जिनकी महन्ताई अनन्त श्री विभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीराधासर्वेश्वरशरण-देवाचार्य श्री ''श्रीजी'' ने ज्येष्ठ मास के मध्य में वि० सं० २०१३ में सहस्रों सन्त-महन्त एवं भगवद्भक्तों के मध्य श्रीगोपालजी के मन्दिर चला ग्राम में कराई।

म० पं० अ० श्रीव्रजवल्लभशरणजी वेदान्ताचार्य पंचतीर्थ अ० भा० जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ निम्बार्कतीर्थ-सलेमाबाद के अधिकारी पद पर रहकर विशेषतः आचार्यपीठ के अधीनस्थ श्री श्रीजी की बड़ी कुञ्ज रेतिया बाजार (प्रताप बाजार) वृन्दावन में निवास करते हुए श्री श्रीजी की बड़ी कुञ्ज एवं अन्य अनेक कुञ्जों, वाटिका, श्री श्रीजी का बड़ा बगीचा एवं मथुरा में स्थित दुकानें तथा श्रीपरशुरामद्वारा आदि स्थानों की सम्पूर्ण व्यवस्था आपके द्वारा होती रही हैं। इसके अतिरिक्त अनेक ग्रन्थों का प्रणयन, प्राचीन ग्रन्थों पर संस्कृत व्याख्यायें हिन्दी भाषा में अनुवाद, शोधकर्ताओं को शोध सामग्री देकर उन्हें अपने शोधकार्य में सफल बनाना तथा अनेक छात्रों एवं विद्वानों को वेदान्तदर्शन शास्त्र का अध्यापन कराना आपका आदर्शपूर्ण परम अनुकरणीय कार्य था।

निरन्तर प्राचीन ग्रन्थों के अन्वेषण में सतत लगे रहते थे। कभी यहाँ आचार्यपीठ कभी चला ग्राम तो अधिकांश श्रीवृन्दावन रहकर अपनी भजनचर्या साधना चलती रहती। प्रायः श्रीयमुनाजी का स्नान, श्रीवृन्दावन, श्रीगोवर्धन की परिक्रमा, निम्बग्राम (नीमगाँव) की व्यवस्था आदि विविध कार्य कलाप, ''श्रीसर्वेश्वर''

मासिक पत्र का सम्पादन तथा कार्य विशेष से मथुरा पदाति (पैदल) ही जाना-आना आपकी विशेषता थी। शास्त्रीय संगीत में भी परम प्रवीण थे, विविध राग-रागनियों में स्वयं स्वरमञ्जूषा (हारमोनियम) वाद्य वादन का विलक्षण अभ्यास था। भैरवी, आसावरी, भीमपलाशी, मालकोश राग एवं वागीश्वरी राग आपको विशेष प्रिय थी, योगासन करने में अतीव कुशल थे। समागत सन्त-महन्त-विद्वान् या भक्तजन कभी असमय आजाते तो तत्काल स्वयं साग-परावटें निर्माण करके उन्हें भगवत्प्रसाद से सन्तुष्ट करते। आपके सम्बन्ध में जितना उल्लेख किया जाय अल्प ही है।

मिति ज्येष्ठ शुक्ल ५ बुधवार वि० सं० २०४६ दिनांक २६/५/१९९३ को यहाँ श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ निम्बार्कतीर्थ-सलेमाबाद में अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज के स्वर्ण जयन्ती महोत्सव एवं विराट् सनातन धर्म सम्मेलन के अवसर पर अ. पं. श्री व्रजवल्लभशरणजी वेदान्ताचार्य पंचतीर्थ श्रीवृन्दावन से यहाँ आकर विशाल भव्यतम पण्डाल के मंच पर खड़े होकर उन्होंने कुछ क्षणों तक प्रवचन किया, उस समय आपकी आयु ९२ वर्ष की थी।

मिति-पौष शुक्ल ११ रविवार वि० सं० २०५० दिनांक २३/१/१९९४ में चला से श्रीअधिकारीजी का चिकित्सार्थ जयपुर आगमन हुआ। उस अवसर पर वर्तमान निम्बार्काचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज का श्रीनिम्बार्कनिकुञ्जविहारी मन्दिर, निम्बार्कनगर, हीरापुरा, पावरहाउस, जयपुर ही विराजना हो रहा था। श्रीअधि-कारीजी भी डाक्टरों को दिखा कर मन्दिर ही आगये। आचार्यश्री

का और श्रीअधिकारीजी का उस समय मिलन हुआ, पं० श्रीदया-शंकरजी शास्त्री ब्यावर एवं भक्तवर श्रीकल्याणप्रसादजी सूतवाले, श्रीकेशवदेवजी वकील, म० श्रीवनवारीशरणजी जूसरी, श्रीश्याम-शरणजी वृन्दावन, म० श्रीप्रेमकिशोरशरणजी-श्रीपन्नादासजी पुष्कर एवं स्थानीय सभी परिकर आदि उपस्थित थे। उस समय श्रीअधि-कारीजी मखाना प्रसाद एक थैली से सबको वितरण कर रहे थे, तब आचार्यश्री ने अपनी अञ्जली उनके समक्ष करदी, कुछ क्षण मौन रहकर कहा ''त्वदीयं वस्तु गोविन्द तुभ्यमेव समर्पये'' इस प्रकार कहते हुए मखाने भरी हुई उस थैली को आचार्यश्री के अञ्जली में अर्पित कर दी। उपस्थित सभी महानुभाव हँसने लगे। परस्पर चर्चा के अनन्तर श्रीअधिकारीजी ने कहा अब सन्ध्या समय निकट है आपश्री आचार्यपीठ पधारेंगे और हम भी अभी चला के लिए प्रस्थान करते हैं।

आचार्यश्री सपरिकर आचार्यपीठ प्रस्थान कर लगभग रात्रि ८ बजे यहाँ पधारे। महल में प्रवेश करते ही फोन आया कि श्रीअधिकारीजी वकील श्रीकेशवदेवजी की कार मोटर में ही शाहपुरा के निकट अपने पाञ्चभौतिक शरीर को त्यागकर श्रीभगवद्धाम की प्राप्ति कर गये। आचार्यश्री को अतिदुःखद समाचार को श्रवण कर महती वेदना हुई। आचार्यपीठस्थ सभी परिकर अति दुःखित हुए।

श्रीआधिकारीजी ने पहले ही अपना अभिप्राय प्रकट करते हुए कहा था कि हमारे शरीर का जब भी अन्त हो जाय उसे प्रथम चला ग्राम में भ्रमण कराकर श्रीवृन्दावन ले जाकर अन्तिम अग्नि संस्कार संक्षेप में करके इस शरीर को श्रीयमुनाजी में प्रवाहित कर

देना जिससे कच्छप आदि जल जन्तुओं को कुछ आहार मिले।

श्रीअधिकारीजी की भावनानुसार समस्त क्रियायें उसी प्रकार पूर्ण की गई। इधर आचार्यपीठ से आचार्यश्री भी श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा सहित सपरिकर श्रीवृन्दावन यथावसर पर पधार आये थे। आपश्री के सान्निध्य में श्रीवृन्दावन में समस्त कार्य विधिवत् सम्पादित किये गये। आचार्यश्री के निर्देशानुसार वृन्दावन के प्रमुख मार्गों से सहस्रों-सहस्रों सन्त-महन्त, भक्तसमूह के साथ विशाल शवयात्रा परिभ्रमण पूर्वक श्रीयमुना पुलिन पर पहुँच कर अग्नि संस्कार के पश्चात् उनकी भावनानुसार श्रीयमुना धारा में उन्हें प्रवाहित किया।

वस्तुतः अ० पं० श्रीव्रजवल्लभशरणजी वेदान्ताचार्य पंचतीर्थ एक ऐसे विशिष्ट महानुभाव थे जिनका पवित्र जीवन श्रीभगवन्मय था। नियमानुसार १७ दिन पूर्ण होने पर वृहद् झडा पंगत का श्रीवृन्दावन में आयोजन किया गया। हजारों-हजारों सन्त-महन्त-भक्तसमूह व्रजवासीजनों ने वृहद् पंगत में उपस्थित होकर भगवत्प्रसाद ग्रहण किया। सभी समागत श्रीअधिकारीजी की अनुपम कीर्ति का स्मरण करते हुए सभी ने श्रीसर्वेश्वर प्रभु की जय ध्वनि करते हुए अपने-अपने गन्तव्य की ओर प्रस्थान किया।

चला ग्रामवासी भी बहु संख्या में श्रीवृन्दावन इस अवसर पर उपस्थित थे। चला में आचार्यश्री की भावनानुसार श्रीअधिकारीजी की भव्य प्रतिमा भी प्रतिष्ठित बड़े विशाल समारोह के साथ की गई।

श्रीपीताम्बरदेवजी की पावन परम्परा में अ० पं० महन्त श्रीव्रजवल्लभशरणजी वेदान्ताचार्य पंचतीर्थ का अपना अनुपम

विलक्षण वैशिष्ट्य था। यहाँ प्रस्तुत प्रसंग में अति संक्षेपतः उनका उत्तम स्वरूप निर्दिष्ट किया गया है।

यह सब श्रीमत्पीताम्बरदेवजी महाराज का ही लोकोत्तर तपः प्रभाव था जो सभी कार्य परिपूर्ण हुए। श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ एवं चला में भी श्रीअधिकारीजी के भण्डारा-उत्सव का अभूतपूर्व आयोजन हुआ जो निश्चित ही अनिवर्चनीय था। परमाचार्यवर्य श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज के कृपापात्र शिष्य श्रीपीताम्बरदेवजी के चरित के प्रंसग में संक्षेप में सभीवृत्त प्रस्तुत किये जिन्हें भक्तजन यथावसर अनुशीलन कर आपके सुपावन चरित से अवगत होकर परम लाभान्वित हों।

परमाचार्यप्रवर श्रीभट्टाचार्यजी महाराज एवं आपके पश्चात् जितने भी आचार्यवर्य हुए इस अ. भा. जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ पर वे सभी गौड़विप्र ही थे। वर्तमान में भी यही परम्परा यहाँ की सुदृढ है। और भविष्य में भी उक्त परम्परा ही अक्षुण्ण रूप से रहेगी।

--पं० वासुदेवशरण उपाध्याय
व्या० सा० वेदान्ताचार्य
प्राचार्य-श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय
श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ
(सलेमाबाद) किशनगढ, अजमेर (राज०)

चैत्र शुक्ल १ शुक्रवार
वि० सं० २०६९
दिनांक : २३/३/२०१२

श्रीपीताम्बरदेवजी का पावन स्वरूप

विक्रम की पन्द्रहवीं शताब्दी में व्रज-मथुरा से अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर रसिकराजराजेश्वर ''श्रीमहावाणी'' ग्रन्थकार श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज की पावन आज्ञा शिरोधार्य कर अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्का-चार्यपीठाधीश्वर ''श्रीपरशुरामसागर'' ग्रन्थकार श्रीपरशुरामदेवा-चार्यजी महाराजका राजस्थान में पुष्कर क्षेत्रान्तर्गत श्रीनिम्बार्कतीर्थ शुभागमन हुआ। आपश्री के शिष्य त्रय थे जिनमें प्रथम श्रीहरिवंश-देवाचार्यजी महाराज जो आगे चलकर यहाँ आचार्यपीठासीन हुए और द्वितीय शिष्य श्रीपीताम्बरदेवजी, ये किशनगढ-सिलोरा के समीप पर्वत कन्दरा में निवास कर तपः साधना की एतावता आपके नाम से ही अद्यावधि.वह कन्दरा पीताम्बरजी की गाल नाम से प्रख्यात है और कालान्तर में आपने सीकर मण्डल लोहार्गल क्षेत्र में चला नामक ग्राम श्रीगोपाल मन्दिर की स्थापना कर वहीं तपश्चर्या की तथा तृतीय शिष्य श्रीतत्त्ववेत्ताचार्यजी ने नागोर मण्डलान्तर्गत जयतारण ग्राम में श्रीगोपाल मन्दिर की स्थापना कर अपने आराध्य की आराधना में तत्पर रहे।

यहाँ इस प्रस्तुत पीताम्बर-दशश्लोकी अति लघु ग्रन्थ में

संक्षेपतः आपके अनुपम चरित का संकेत मात्र किया गया है जिसे रसिक सन्त भावुकजन अनुशीलन कर आपके स्वरूप का पावन बोधकर सकें। विस्तृत जानकारी के लिए श्रीवृन्दावन श्री श्रीजी बड़ी कुंज से प्रकाशित ''श्रीगोपालयज्ञ स्मारिका'' से अवगत हो सकते हैं।

--श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

शुभ मिति - चैत्र शुक्ल १
शुक्रवार, वि० सं० २०६९
नवसम्वत्सर
दिनांक : २३/३/२०१२ ई०

॥ श्रीसर्वेश्वरो जयति ॥

॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

श्रीपीताम्बरदशश्लोकी

(१)

निम्बार्काचार्यपादाब्ज-परम्पराऽऽगतं भुवि ।
परशुरामदेवञ्चाऽऽचार्यं जगद्गुरुं भजे ॥

(२)

परशुरामदेवस्य पट्टशिष्यमतिप्रियम् ।
श्रीहरिवंशमाचार्यं ततः पीताम्बरं भजे ॥

(३)

इत्थञ्च तत्त्ववेत्तारं दाधीच-विप्रसत्तमम् ।
परशुरामदेवस्य शिष्यं नमामि सादरम् ॥

(४)

इमे त्रयश्च शिष्या हि विरक्ताः सिद्धिसागराः ।
गुरोराज्ञां समादाय विचरन्तिस्म भूतले ॥

(५)

एषु पीताम्बरोदेवः कृष्णदुर्गाऽन्तिके शुभे ।
द्रु-निर्झरयुतेऽद्रौ तत्कन्दरे न्यवसत्पुरा ॥

(६)

तन्नाम कन्दरा जाता श्रीपीताम्बरकन्दरा ।
कालान्तरे चला-ग्रामेऽवसत्सीकरमण्डले ।।

(७)

तत्प्रभावं चलाक्षेत्रेऽवगच्छन्ति जनाः समे ।
इत्थं पीताम्बरं देवं वन्दे निम्बार्कभावनम् ।।

(८)

राधाकृष्णपदाम्भोजे ध्यानलीनश्च नित्यशः ।
एवं पीताम्बरं देवं नौमि गोपालसेवकम् ।

(९)

गोविप्रसाधुसेवायां तत्परं पूर्णनिष्ठया ।
श्रीमत्पीताम्बरं वन्दे गोपालमन्दिरे स्थितम् ।।

(१०)

निम्बार्कशास्त्रसिद्धान्त-द्वैताद्वैतप्रचारकम् ।
श्रीमत्पीताम्बरं देवं गौडविप्रं भजे हृदा ।।

(११)

पीताम्बरसुदेवस्य दशश्लोकी सुखप्रदा ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मिता ।।



श्रीपीताम्बरदशश्लोकी

प्रणम्य राधिकाकृष्णं श्रीमद्गुरुं कृपार्णवम् ।
पीताम्बरदशश्लोकी रच्यते रससम्प्रदा ।।

श्रीराधाकृष्ण भगवान् एवं कृपासिन्धु श्रीगुरुदेव को सश्रद्ध प्रणाम करके आनन्ददायिनी श्रीपीताम्बरदशश्लोकी का प्रणयन कर रहे हैं ।

(१)

निम्बार्काचार्यपादाब्ज-परम्पराऽऽगतं भुवि ।
परशुरामदेवञ्चाऽऽचार्यं जगद्गुरुं भजे ।।

श्रीसुदर्शनचक्रावतार सम्प्रदायप्रवर्तक आद्याचार्य जगद्गुरुवरेण्य श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य की पावन आचार्यपरम्परा में इस धराधाम पर आचार्यप्रवर जगद्गुरु श्रीमत्परशुरामदेवाचार्य जी महाराज ३६ वीं आचार्य परम्परा में श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर थे। आपश्री रसिकराजराजेश्वर श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर जगद्गुरु श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज के प्रमुख पट्टशिष्य थे। और ''श्रीपरशुरामसागर'' वृहद् ग्रन्थ के रचयिता वैष्णवीसिद्धि सम्पन्न थे, उन ऐसे आचार्यवर अ० भा० निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर जगद्गुरु श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज का मनसा, वाचा, कर्मणा भजन स्मरण करते हैं ।।१।।

(२)

परशुरामदेवस्य पट्टशिष्यमतिप्रियम् ।
श्रीहरिवंशमाचार्यं ततः पीताम्बरं भजे ।।

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज के अतिप्रिय पट्टशिष्य श्रीहरिवंशदेवाचार्यजी महाराज जो यहाँ आचार्य पीठासीन हुए। और श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी के द्वितीय शिष्य श्रीपीताम्बरदेवजी हुए जिनका अनुस्मरण करते हैं।।२।।

(३)

इत्थश्च तत्त्ववेत्तारं दाधीच विप्रसत्तमम् ।
परशुरामदेवस्य शिष्यं नमामि सादरम् ।।

इस प्रकार श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज के तृतीय शिष्य उत्तम दाधीच विप्र श्रीतत्त्ववेत्ताचार्यजी हुए जिनको आदर सहित नमस्कार करते हैं। (इनका विस्तृत चरित ''तत्त्व चरित'' नामक पुस्तक में वर्णित है जो पूर्व में जयतारण श्रीगोपालद्वारा के महन्त श्रीयमुनाशरणजी ने उसे प्रकाशित कराया था, अब पुनः उसी पुस्तक को यहाँ आचार्यपीठ से प्रकाशित किया है) ।।३।।

(४)

इमे त्रयश्च शिष्या हि विरक्ताः सिद्धिसागराः ।
गुरोराज्ञां समादाय विचरन्तिस्म भूतले ।।

इनमें श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज के तीनों विरक्त शिष्य जो परम प्रसिद्ध सिद्धि सम्पन्न जिनमें प्रथम श्रीहरिवंश-देवाचार्यजी महाराज तो यहाँ आचार्यपीठासीन होकर भारत के विभिन्न क्षेत्रों में परिभ्रमण पूर्वक सम्प्रदाय प्रचार में तत्पर हुए और अपने श्रीगुरुदेव की आज्ञानुसार श्रीतत्त्ववेत्ताचार्यजी जयतारण में श्रीगोपालद्वारा निर्माणानन्तर वहीं तपोनिष्ठ रहे। और एक किशनगढ के निकटवर्ती सिलोरा ग्राम के समीप पर्वतमालाओं की कन्दरा में कुछ समय तपोनिरत रहकर वहाँ से तीर्थ यात्रा करते हुए जिला-सीकर क्षेत्र में चला नामक ग्राम के अति निकट भक्तों के आग्रह से श्रीपीताम्बरदेवजी ने वहाँ श्रीगोपाल मन्दिर का निर्माण कराके अपने आराध्य की उपासना में तल्लीन रहने लगे॥४॥

(५)

एषु पीताम्बरोदेवः कृष्णदुर्गाऽन्तिके शुभे ।
द्रु-निर्झरयुतेऽद्रौ तत्कन्दरेन्यवसत्पुरा ॥

इन तीन शिष्यों में श्रीपीताम्बरदेवजी किशनगढ के समीपस्थ सिलोरा-ग्राम के कुछ दूरी पर अर्थात् समीप में ही वृक्ष-लताओं एवं झरना से शोभित पर्वत श्रेणियों की कन्दरा अर्थात् गाल में आपने कतिपय समय पर्यन्त निवास करते हुए अपने इष्टदेव के ध्यान में निमग्न रहे। जिस पर्वत श्रेणियों के मध्य आपने निवास किया उसी से उस स्थान का नाम पीताम्बरजी की

गाल नाम से लोक विश्रुत है ।।५ ।।

(६)

तन्नाम कन्दरा जाता श्रीपीताम्बरकन्दरा ।
कालान्तरे चला-ग्रामेऽवसत्सीकरमण्डले ।।

श्रीपीताम्बरदेवजी के नाम से ही उक्त गाल अति प्रसिद्ध है, एतद् क्षेत्रीय समस्त जन समुदाय उक्त नाम से पूर्णतया परिचित हैं। कालक्रमानुसार इस स्थान से तीर्थयात्रा के क्रम में जिला-सीकरमण्डलान्तर्गत चला ग्राम विधिवत् निवास किया जिसकी प्रसङ्गवशात् चर्चा निर्दिष्ट की जा चुकी है ।।६ ।।

(७)

तत्प्रभावं चलाक्षेत्रेऽवगच्छन्ति जनाः समे ।
इत्थं पीताम्बरं देवं वन्दे निम्बार्कभावनम् ।।

श्रीपीताम्बरदेवजी के तपः प्रभाव को चला ग्राम के एवं उसके निकटवर्ती ग्रामों के सभी भक्तजन सुपरिचित हैं। ऐसे श्रीनिम्बार्क भगवान् की भावना में तल्लीन श्रीपीताम्बरदेवजी की मनसा, वाचा, कर्मणा अभिवन्दना करते हैं ।।७ ।।

(८)

राधाकृष्णपदाम्भोजे ध्यानलीनश्च नित्यशः ।
विप्रं पीताम्बरं देवं नौमि गोपालसेवकम् ।

श्रीराधाकृष्ण भगवान् के श्रीचरणारविन्दों में सर्वदा ध्यान-चिन्तन करने में तल्लीन और श्रीगोपाल भगवान् की सर्वाङ्गीण

सेवा में तत्पर एवंविध श्रीपीताम्बरदेवजी को नमन करते हैं॥८॥

(९)

गोविप्रसाधुसेवायां तत्परं पूर्णनिष्ठया ।
श्रीमत्पीताम्बरं वन्दे गोपालमन्दिरे स्थितम् ।।

गोमाता, ब्राह्मण तथा समागत सन्त-महात्माओं की सेवा में पूर्णनिष्ठा पूर्वक सदा-सर्वदा तत्पर एवं श्रीगोपालजी के मनोहर मन्दिर में विराजित श्रीपीताम्बरदेवजी की वन्दना करते हैं॥९॥

(१०)

निम्बार्कशास्त्रसिद्धान्त-द्वैताद्वैतप्रचारकम् ।
श्रीमत्पीताम्बरं देवं गौडविप्रं भजे हृदा ।।

श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य का जो दार्शनिक स्वाभाविक द्वैताद्वैत सिद्धान्त है उसके परम प्रचारक ऐसे श्रीपीताम्बरदेवजी जो गौड विप्र हैं उनका हृदय से भजन-अर्थात् ध्यान करते हैं॥१०॥

(११)

पीताम्बरसुदेवस्य दशश्लोकी सुखप्रदा ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मिता ।।

श्रीपीताम्बरदेवजी की उनके पवित्र चरित से परिपूर्ण आनन्दप्रद यह दशश्लोकी उनके समाराध्य श्रीगोपाल भगवान् की कृपास्वरूप यहाँ पर प्रस्तुत है जिसकी रचना में हमें निमित्त बनाया है॥११॥

(१)

जगद्‌गुरुवर परशुराम-देवाचार्य महान।
तिनके त्रय प्रसिद्ध शिष्य, तेज प्रबल सम्मान।।

(२)

हरिवंशदेवाचार्यवर,-पट्टशिश्य द्युतिमान।
श्रीपीताम्बरदेवजी, तत्त्ववेत्त गुणवान।।

(३)

हरिवंशदेवाचार्यवर, पीठाचार्य प्रख्यात।
राधाकृष्ण उपासना, सर्वेश्वर को ध्यात।।

(४)

श्रीपीताम्बरदेवजी कृषणदुर्ग गिरिवास।
गाँव सिलोरा अति निकट, सुन्दर पर्वत पास।।

(५)

निर्झर कदम्ब वृक्ष हैं, सुभग कन्दरा ताल।
श्रीपीताम्बरदेव के, नाम विदित वह गाल।।

(६)

की तपस्या दीर्घकाल, मन्त्रराज का जाप।
अनुष्ठान सम्पन्न कर, सीकर मण्डल आप।।

(७)

चला - ग्राम में आपने, अपनाया निज वास।
गोपाल मन्दिर अभिनव, निर्मित हुव निज पास।।

(८)

श्रीपीताम्बरदेवजी, परम तपस्वी सिद्ध।
गोपाल प्रतिष्ठा पूर्वक,सीकर क्षेत्र प्रसिद्ध।।

(९)

अगणित सन्त-महन्त -जन, आनंद लिया अपार।
श्रीपीताम्बरदेव की, जय जय बारम्बार।।

(१०)

श्रीपीताम्बरदेव की, अन्तर्मन हरि ध्यान।
श्रीनिम्बार्क-परम्परा, युगलनाम मुख गान।।

(११)

द्वैताद्वैत सिद्धान्त का, ज्ञान किया अपार।
श्रीपीताम्बरदेव ने, किया सिद्धान्त प्रचार।।

(१२)

श्रीहरि कीर्तन निरत हैं, सेवा श्रीगोपाल।
श्रीपीताम्बरदेव ने, पधरायी मणिमाल।।

(१३)

श्रीपीताम्बरदेव का, ध्यान करहिं सब भक्त।
जय बोलो गोपाल की, उच्चस्वर अनुरक्त।।

(१४)

प्रतिदिन साधु सेवा हो, गो-सेवा हर रोज।
श्रीपीताम्बरदेव का, अनुपम उनका ओज।।

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्री ''श्रीजी'' महाराज

द्वारा विरचित-

* ग्रन्थमाला *

		प्रकाशित	श्लोक सं.
१.	श्रीनिम्बार्क भगवान् कृत प्रातःस्तवराज पर (युग्मतत्त्व प्रकाशिका) नामक संस्कृत व्याख्या	,,	
२.	श्रीयुगलगीतिशतकम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	११८
३.	उपदेश - दर्शन (हिन्दी-गद्यात्मक)	,,	
४.	श्रीसर्वेश्वर-सुधा-बिन्दु (पद सं. १३२)	,,	
५.	श्रीस्तवरत्नाञ्जलिः (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	३६५
६.	श्रीराधामाधवशतकम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	१०५
७.	श्रीनिकुञ्ज-सौरभम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	५८
८.	हिन्दु-संघटन (हिन्दी-गद्यात्मक)	,,	
९.	भारत-भारती-वैभवम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	१३७
१०.	श्रीयुगलस्तवविंशतिः (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	१८६
११.	श्रीजानकीवल्लभस्तवः (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	४०
१२.	श्रीहनुमन्महिमाष्टकम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	२२
१३.	श्रीनिम्बार्कगोपीजनवल्लभाष्टकम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	१५

१४. भारत कल्पतरु (पद सं० ६६, दोहा सं० १६०) ,,
१५. श्रीनिम्बार्कस्तवार्चनम् (संस्कृत-पद्यात्मक) ,, ६५
१६. विवेक-वल्ली (पद सं० ४१६) ,,
१७. नवनीतसुधा (संस्कृत-गद्यात्मक) ,,
१८. श्रीसर्वेश्वरशतकम् (संस्कृत-पद्यात्मक) ,, १०८
१९. श्रीराधाशतकम् (संस्कृत-पद्यात्मक) ,, १०३
२०. श्रीनिम्बार्कचरितम् (संस्कृत-गद्यात्मक) ,,
२१. श्रीवृन्दावनसौरभम् (संस्कृत-पद्यात्मक) ,, ६०
२२. श्रीराधासर्वेश्वरमंजरी ,,
(पद सं.६४-दोहा सं.९२)
२३. श्रीमाधवप्रपन्नाष्टकम् ,, १०
(संस्कृत-हिन्दी-पद्यात्मक) (पद सं० २०)
२४. छात्र-विवेक-दर्शन (हिन्दी दोहा-पद्यात्मक) ,,
(दोहा सं० २४१)
२५. भारत-वीर-गौरव (हिन्दी-पद्यात्मक दोहा सं. १८१) ,,
२६. श्रीराधासर्वेश्वरालोकः (संस्कृत-हिन्दी-पद्यात्मक) ,,
(दोहा सं० ३२)
२७. परशुराम-स्तवावली (संस्कृत-हिन्दी-पद्यात्मक) ,, १७
(दोहा सं० ४६, पद सं० ६)
२८. श्रीराधा-राधना (संस्कृत-हिन्दी-पद्यात्मक) ,, ५९
(पद सं० २८, दोहा सं० ५१)
२९. मन्त्रराजभावार्थ-दीपिका (संस्कृत-पद्यात्मक) ,, १८
३०. आचार्यपञ्चायतनस्तवनम् (संस्कृत-पद्यात्मक) ,, ३५

३१. श्रीराधामाधवरसविलास, महाकाव्य ,,
(दोहा सं० १०५३)

३२. गोशतकम् (संस्कृत-पद्यात्मक) ,, १३५
(दोहा सं० ६३, पद सं० १४)

३३. श्रीसीतारामस्तवादर्शः ,, ८०
(संस्कृत-हिन्दी-पद्यात्मक) (दोहा सं. १०१, पद सं. १६)

३४. स्तवमल्लिका (संस्कृत पद्यात्मक) ,, २१३
(दोहा सं० ४२)

३५. श्रीरामस्तवावली (संस्कृत -पद्यात्मक) ,, ५९
(दोहा सं० २१)

३६. श्रीमाधवशरणापत्तिस्तोत्रम् ,, १०३

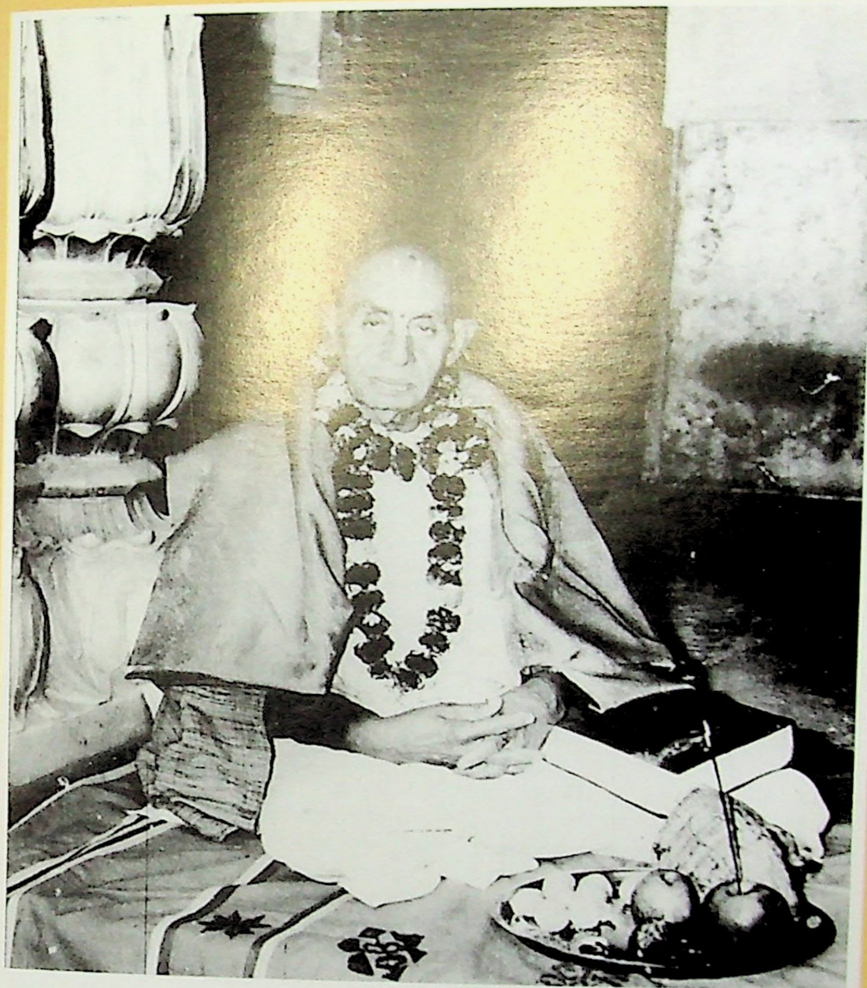
३७. दिव्यचरितप्रभा ,,

३८. प्रेरणाशतकम् (संस्कृत-पद्यात्मक) ,, १०३

३९. उद्गारशतकम् (संस्कृत गद्यात्मक) ,,

४०. श्रीपीताम्बरदशश्लोकी (संस्कृत-पद्या.) ,,

कुल हिन्दी पद सं० २७८२ कुल श्लोक सं० २२४४



भगवत्सेवा में तल्लीन

अ. पं. श्रीव्रजवल्लभशरणजी



अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीराधा-सर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज का जन्म विक्रम संवत 1986 वैशाख शुक्ल 1 शुक्रवार तदनुसार दिनांक 10 मई, 1929 को निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) में हुआ। अपकी माताश्री का नाम स्वर्णलता (सोनीबाई) एवं पिताश्री का नाम श्रीरामनाथजी शर्मा गौड़ इन्दोरिया था। आप जैसे नक्षत्रधारी महापुरुष के जन्म से यह विप्र वंश धन्य हुआ है। आपश्री 11 वर्ष की अल्पावस्था में वि.सं. 1997 आषाढ़ शुक्ल 2 रविवार (रथयात्रा) के शुभावसर पर अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज से वैष्णवी दीक्षा से दीक्षित होकर पीठ के उत्तराधिकारी नियुक्त हुए। वि.सं. 2000 में पूज्य गुरुदेव के गोलोकवास होने पर 14 वर्ष की अवस्था में ज्येष्ठ शुक्ल 2 शनिवार दिनांक 5 जून 1943 को आचार्यपीठ पर आसीन हुए। तदनन्तर 4 वर्ष तक श्रीधाम वृन्दावन में न्याय-व्याकरण-वेदान्त आदि शास्त्रों का अध्ययन किया। वज्रविदेही चतु:सम्प्रदाय श्रीमहन्त श्री धनञ्जयदासजी काठिया बाबा महाराज तर्क-तर्कतीर्थ जैसे महानुभावों का आपको संरक्षण प्राप्त हुआ। आपश्री के आचार्यत्वकाल में वैष्णव चतु:सम्प्रदायों के आचार्यों, श्रीमहन्तों, सन्त महात्माओं, समस्त शंकराचार्यों श्रीकरपात्रीजी महाराज, महामण्डलेश्वरों, देश के मूर्धन्य मनीषियों, राजा-महाराजाओं, राजनेताओं के साथ निकटतम घनिष्ठ सम्पर्क बढ़ा। श्री निम्बार्क सम्प्रदाय का चतुर्दिक् विस्तार हुआ। वि.सं. 2001 में आपश्री ने 15 वर्ष की अवस्था में कुरुक्षेत्र के विराट् साधु सम्मेलन में जगद्गुरु पुरीपीठाधीश्वर श्रीभारतीकृष्णतीर्थजी महाराज के तत्त्वावधान में अध्यक्ष पद को अलंकृत किया।

आपश्री के कार्यकाल में तीनधाम सप्तपुरी की यात्रा सम्पन्न हुई। प्रयाग, हरिद्वार (वृन्दावन), उज्जैन, नासिक इन चारों स्थानों के कुम्भ पर्वों पर अनेकश: श्रीनिम्बार्कनगर में समायोजित धार्मिक अनुष्ठानों, धर्माचार्यों के सदुपदेशों, विविध सम्मेलनों द्वारा समग्र जन समुदाया को सन्मार्ग की ओर प्रेरित किया जाता है। इसी प्रकार सं. 2026 में वज्रयात्रा, 2031 में विराट् सनातन धर्म सम्मेलन, 2047 में श्रीमुरारी बापू की रामकथा, 2050 में स्वर्ण जयन्ती समारोह के अवसर पर अ.भा. विराट् सनातन धर्म सम्मेलन, 2061 में श्री भगवन्निम्बार्काचार्य 5100वां जयन्ती महोत्सव पर विराट् सनातनधर्म सम्मेलन, 2062 में युगसन्त श्रीमुरारीबापू द्वारा श्रीरामकथा, 2063 में श्रीरमेश भाई ओझा द्वारा श्रीमद्भागवत कथा आदि आयोजनों द्वारा जो धार्मिक चेतना जन-जन में स्फुरित करायी गयी वह सदा स्मरणीय है। प्रत्येक अधिकमास में आचार्यपीठ पर आयोजित होने वाले अष्टोत्तरशतभागवत, यज्ञानुष्ठान, प्रवचन श्रीरासलीलानुकरण आदि कार्यक्रम भी सदा प्रेरणाप्रद रहते हैं। आप द्वारा प्रतिदिन किया जाने वाला श्रीयुगलनाम-संकीर्तन भी श्रवणीय होता है। सन् 1966 में दिल्ली के विराट् गो-रक्षा सम्मेलन में आपश्री का सपरिकर पादार्पण हुआ था। इस अवसर पर स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज एवं अन्य धर्माचार्यों से जो महनीय विचार विमर्श हुआ वह परम ऐतिहासिक है।

आपश्री ने अपने आचार्यत्व काल में जितना देश-देशान्तरों में सम्प्रदाय का वर्चस्व बढ़ाया है उतना ही देवालयो के निर्माण, जीर्णोद्धार, शैक्षणिक संस्थाओं का निर्माण-संचालन, साहित्य प्रकाशन, नूतन ग्रन्थ रचना, गोशाला, मुद्रणालय आदि संस्थाओं द्वारा आचार्यपीठ का सर्वतोभावेन विकास किया है। आपश्री द्वारा रचित 37 ग्रन्थों में से भारत-कल्पतरु ग्रन्थ का विमोचन भारत के उपराष्ट्रपति श्रीशंकरदयालजी शर्मा ने दिल्ली में किया। इसी प्रकार आपके अन्य ग्रन्थों का मूर्द्धन्य राजनेताओं, शीर्षस्थ महापुरुषों, जगद्गुरुओं द्वारा विमोचन समारोह सम्पन्न हुये हैं। एवं आप द्वारा प्रणीत रचनाओं पर तीन-चार शोधप्रबन्ध भी प्रस्तुत हुए हैं जो मननीय हैं। अस्वस्थ अवस्था में भी आप निरन्तर क्रियाशील रहते है। आपश्री का संरक्षण पाकर और आपश्री के महान् व्यक्तित्व व कृतित्व से श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय किंवा सनातन धर्म जगत् विशेषत: उपकृत हुआ है। आपके मधुर दर्शन की एक झलक पाने और आपश्री के वचनामृत सुनने के लिए धार्मिक जन सदा समुत्सुक रहते हैं।